शोध सारांश

ये हम सभी जानते हैं कि भाव तथा विचार को व्यक्त करने में भाषा एक माध्यम का कार्य करती है परन्तु इसी माध्यम स्वरूप भाषा मानव के मुख से निकलकर इच्छित ध्वनि प्रतीकों की जब एक व्यवस्था बन जाती है तब यह सम्पूर्ण मानव समुदाय के भावों एवं विचारों को संप्रेषित करने वाली एक ऐसी विलक्षण शक्ति कहलाती है , जो उनके भाव, विचार, अभिव्यंजना, मस्तिष्क एवं हृदय में बराबर विद्यमान रहती है और यह किसी भाषा या वाणी के माध्यम से ही व्यक्त होती है। भाषा के व्यवहार में सदैव ही एक व्यक्तिगत विशिष्टता रहती है। जो विभिन्न संदर्भो, स्थितियों और उद्देश्यों के आधार पर अलग-अलग प्रकार से भाषा का प्रयोग होता है। भाषा में यह विविधता और विषमता काल-विशेष, स्थान-विशेष, समाज विशेष, विद्या विशेष आदि के कारण पाई जाती है|

बहरहाल, डॉ. कुंअर बेचैन हिंदी ग़ज़ल में प्रयोगधर्मी, बहुआयामी एवं विशिष्ट ग़ज़लकार है यही कारण है कि इनकी गजलें भी बहुअयामी होने के कारण अनेक नये-नये तत्वों से सांगोपांगवित है। इनकी गजले कलात्मक सौन्दर्यनुभूति को संप्रेषित करने में समर्थ है। भावाभिव्यक्ति की सजीवता और भाषा की बेबाकी इनके शिल्प वैशिष्ट्य कलात्मकता की ठोस भूमि प्रदान करता है। डॉ. बेचैन ग़ज़ल शैली की दृष्टि से ऐसे दिलचस्प ग़ज़लकार हैं जो भाषिक संरचना में ऐसे-ऐसे शब्दों का संयोजन करते हैं जिससे शैली में एक ख़ास तरह की ताज़गी और कलात्मक अभिव्यक्ति का सन्निवेश हो जाता है। डॉ. बेचैन की विशिष्ट काव्यात्मक क्षमता को उभारने के लिए शैलीवैज्ञानिक अध्ययन के मार्फत कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं।

गालिबन, कृति के मर्म को उज़ागर करने की प्रक्रिया में शैलीवैज्ञानिक अध्ययन के उपकरण सहायक हैं। संरचना के स्वरूप को समझा और समझाया जा सकता है कि साहित्यिक कृति एक संरचना है जो पूर्ण सावयवीय एवं स्वनिष्ट है। इसके इतर शैलीविज्ञान के अध्ययन के प्रतिमान चयन, विचलन और समानांतरता को भाषिक स्तरों पर विश्लेषण किया गया है। इसके साथ ही साथ इसके माध्यम से कृति के कलात्मक सौन्दर्य को उद्घाटित करने में सहायता मिली है । ये समस्त तत्व शैलीवैज्ञानिक अध्ययन के उपकरण को समृद्ध, मार्मिक, प्रभावोत्पादक बनाते हैं।

इसके उपरांत चयन की अवधारणा के साथ डॉ. बेचैन की ग़ज़लों में चयन को समझने की कोशिश की गई है। चयन में भावों के आधार पर कोमल एवं मधुर ध्वनि, कठोर ध्वनि, महाप्राण ध्वनि

तथा नदी, झरने, मानव, पशु-पक्षियों के मृदुल भाव के लिए नाद-सौन्दर्य ध्वनियों का चयन करके बेचैन ने ग़ज़लों में विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न किया है। इसके साथ ही साथ गाँव के आंचलिक शब्दों का प्रयोग तथा शब्दों को शैली के आधार पर तत्सम, तद्भव, देसज एवं विदेशी (अरबी-फ़ारसी तथा अंग्रेजी) के शब्दों का प्रयोग कलात्मक सौन्दर्य को और निखार देता है। इसी प्रकार रूप के तथा नये शब्द निर्माण में डॉ. बेचैन सफल ग़ज़लकार है।

विचलन में ध्वनि स्तरीय विचलन को विस्तार मिला है तो शब्द स्तरीय विचलन में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण शब्द इत्यादि को। रूपस्तरीय विचलन में मानक रूपों का प्रयोग न होने से (कारक, लिंग, वचन, रूपिम के कारण डॉ. बेचैन गजलें अधिक गंभीर और मार्मिक है। इसी प्रकार अन्य स्तर पर भी सफलता प्राप्त की है।

समानांतरता कविता के मर्म को उजागर करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसके अंतर्गत समध्वनियाँ ग़ज़ल को कोमल बनायी है तो शब्द भी। इनके पूर्ण विराम, अर्ध विराम, संबंध चिन्ह जबकि पंक्ति की सघनता –विरलता के साथ-साथ हिंदी अंग्रेजी शब्दों के आधार पर ग़ज़लों का अध्ययन किया गया है।

इसलिए समग्रत: कहा जा सकता है कि शैलीवैज्ञानिक अध्ययन द्वारा डॉ. बेचैन की ग़ज़लों को समझने और उसके प्रति न्याय करने के अनेक आयाम प्राप्त हुए हैं। उनकी उपलब्धियां आने वाली पीढ़ी तथा सर्जकों के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य करेंगी।